ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोधभूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 54-61

निर्मल वर्मा के कथेतर साहित्य का अध्ययन

पूजा कुमारी
पी–एच.डी. शोधार्थी
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)
ईमेल– pujabgp831@gmail.com

सारांश

निर्मल वर्मा हिंदी के ऐसे रचनाकार हैं, जिनकी रचनाएं केवल कथा साहित्य तक सीमित न होकर यात्रा वृत्तांत,डायरी, निबंध, साक्षात्कार आदि जैसी कथेतर विधाओं में भी समान रूप से चर्चित है। उनके कथेतर लेखन में हमें भारतीयता, दर्शनिकता, विभिन्न सांस्कृतिक व्यक्तित्व का परिचय दिखाई पड़ता है।

उनके यात्रा वृत्तांत में जीवन अनुभव के साथ–साथ विभिन्न संस्कृतियों का चित्रण मिलता है। पश्चिमी संस्कृति और भारतीय संस्कृति के बीच भिन्नताओं का वर्णन दिखाई देता है। यात्रा केवल बाहरी ना होकर मन के भीतर चल रहे एक अदृश्य यात्रा दोनों साथ–साथ चलते हैं। साक्षात्कार और डायरी में निजी संवेदना, जीवन के आत्म संघर्ष और गहरे विचारों की झलक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भाषा गद्यात्मकता के साथ–साथ काव्यात्मक है। निर्मल वर्मा की डायरियों में आत्मसंवाद, अकेलेपन की अनुभूति, मनुष्य की आंतरिक यातना और रचनात्मक संघर्ष का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। उनकी शैली में बौद्धिक गहराई के साथ भावनात्मक समरसता का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

निर्मल वर्मा का कथेतर साहित्य उनकी रचनात्मक दृष्टि का विस्तार है। उनके साहित्य में केवल विचार या आलोचना नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति और मानवता का गहन आत्मपरीक्षण मिलता है। उनके कथेतर लेखन को पढ़ते हुए प्रायः देखा जाता है कि वे केवल कथाकार ही नहीं बल्कि एक चिंतक और दार्शनिक भी थे, जिनके विचार आज भी हमारी सांस्कृतिक चेतना को दिशा प्रदान करती है।

बीज शब्द : कलात्मक, वास्तविक अनुभव, भावात्मक बोध, चित्रात्मक, जीवनानुभव, साहित्यिक, ऐतिहासिक, गहरी संवेदना

हिन्दी गद्य साहित्य की जो मुख्यधारा है, उसके अतिरिक्त भी गद्य साहित्य अपनी विशेष कलेवर के साथ गतिमान है। संवेदना, शिल्प व अन्य विशेषताओं से युक्त जो गद्य साहित्य को पूर्ण रूप प्रदान करता है, कथेतर कहा जाता है। साहित्यिक विधाओं के सम्बन्ध में लेखक अरुण प्रकाश लिखते हैं –

भारत में कुछ तो भारतीय परंपराओं के विकास और कुछ पश्चिम में तीन चार सौ साल पहले नवोदित विधाओं के रूप पाकर 19 वीं सदी में उपन्यास, कहानी रिपोतार्ज, निबंध, आलोचना, साहित्येतिहास, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी और ऐसी ही कुछ और आधुनिक विद्याओं का जन्म हुआ। ये सभी गद्य की विधाएँ हैं जिनका संबंध जीवन–अनुभव और तर्क की बढी महत्ता से है।

कथेतर गद्य (कथा साहित्य से इतर) के अंतर्गत निबंध, रेखाचित्र, जीवनी, आलोचना, आत्मकथा, संस्मरण, डायरी (दैनंदिनी) पत्र साहित्य, यात्रा–वृत्तांत, रिपोतार्ज, साक्षात्कार (इंटरव्यू, भेंटवार्ता), अभिनंदन एवं स्मृतिग्रंथ को शामिल किया जाता है।

यात्रा–वृत्तांत – यात्रा–वृत्तांत को श्यात्रा–साहित्यश या यात्रा संस्मरण नामों से जाना भी जाता है। एक लेखक अथवा साहित्यकार यात्रा–वृत्तांत में न केवल अपनी यात्रा का ब्यौरा ही हमारे सामने प्रस्तुत करता है, बल्कि उस यात्रा के माध्यम से वहाँ के भौगोलिक क्षेत्र का वर्णन सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक–सांस्कृतिक विश्लेषण भी हमारे सामने रखने का प्रयास करता है। अरुण प्रकाश यात्रा–वृतांत की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए श्गद्य की पहचानश पुस्तक में लिखते है–

यात्रा आख्यान आईना है। यात्रा के सुख–दुख उसकी विश्वसनीयता के उपकरण और सादाब यानी उसका हुनर है। सारे अनुभवों का सटीक वर्णन तो असंभव है फिर भी आईना बनाने की कोशिश यात्रा–आख्यान में दिखनी चाहिए। फ्रांक्वा बर्नियर सत्रहवीं सदी में, मुगल शासक शाहजहाँ के काल में भारत आया। बर्नियर का यात्रा आख्यान मुगलकाल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत माना जाता है।

यात्रा साहित्य उस यात्रा के न केवल बाहरी पक्ष से रूबरू कराता है बल्कि उसे पढकर ऐसा लगता है कि लेखक के जीवंत अनुभव के साथ हम भी बौद्धिक या मानसिक रूप से शामिल हैं।

उस यात्रा की इमेज हमारे सामने एक चलचित्र की भांति उपस्थित हो, तो एक सफल यात्रा–वृत्तांत माना जाता है। शुरुआत से ही मनुष्य यायावरी प्रवृत्ति का रहा है। यात्रा करने में आनंद की अनुभूति होती है, और उस अनुभूति को अपनी कलम से जब पन्नों पर अंकित कर देता है तो उस अनुभूति का आनंद कुछेक साल बाद भले ही मानस पटल से उतर गया हो लेकिन उसे पढ़कर फिर से जीवंत हो उठता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन और अज्ञेय को घुमक्कड़ त्रयी कहा जाता है। पंडित राहुल सांकृत्यायन ने धुमक्कड़ी को धर्म की संज्ञा देते हुए घुमक्कड़ शास्त्र नामक पुस्तक में लिखा है कि–

मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है– घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता । मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है वह जंगम प्राणी है।
चलना मनुष्य का धर्म है जिसने इसे छोड़ा, वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है।
हिन्दी साहित्य में यात्रा–वृत्तांत की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'सरयू–पार की यात्रा' श्लखनऊ की यात्राश और श्हरिद्वार की यात्राश्उल्लेखनीय हैं। बालकृ ष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, भगवान दास वर्मा, दामोदर शास्त्री आदि इस युग के रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी यात्राओं का वर्णन अत्यंत रोचक शैली में प्रस्तुत किया है। डॉ. ओमप्रकाश सिंह ने भारतेंदु युग के यात्रा–वृत्तांत के संबंध में कहा है–

'भारतेंद्र युग में लिखी गयी यात्रा वृत्त–संबंची रचनाओं के अध्ययन–अनुशीलन के अनंतर यह कहना उचित होगा कि विदेश यात्रा संबंधी वर्णनों में लंदन को प्रमुखता मिली है, तो स्वदेश यात्रा संबंधी वर्णनों में तीर्थस्थानों को।[4]

इसी प्रकार द्विवेदी युगीन प्रमुख यात्रा–वृत्तांत देवीप्रसाद खत्री, गोपालराम गहमरी गदाधर सिंह, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक आदि के द्वारा लिखी गयी। आधुनिक काल में अनुराधा बेनीवाल द्वारा रचित यात्रा–वृत्रांत श्आजादी मेरा ब्रांडश जिसे पाठकों ने सराहा है, इस यात्रा साहित्य के विषय में नामवर सिंह ने लिखा है–

हिन्दी साहित्य में अब तक तीन लेखकों के यात्रा–वृतांत मील के पत्थर साबित हुए हैं–राहुल सांकृत्यायन जिन्होंने श्घुमक्कड़शास्त्रश नाम की किताब ही लिख दी, अज्ञेय और फिर निर्मल वर्मा। इस कड़ी में चौथा नाम अनुराधा का भी जुड़ रहा है।[5]

नॉर्थ ईस्ट को समझने के लिए अनिल यादव की यात्रा कृति श्वह भी कोई देश है महाराजश अत्यंत लोकप्रिय है। श्चीड़ों पर चाँदनीश यात्रा वृत्तांत में निर्मल वर्मा दुनिया को एक अलग अंदाज में देखा है। यह यात्रा–वृतांत जितनी बाहर की है उससे अधिक मन के भीतर की भी है। यात्रा के साथ एक स्मृति है जो पीछे छूट गई है वह भी साथ–साथ चलती है। जैसे वह वर्तमान में आइसलैंड में हैं किंतु वे यदा–कदा प्राग की यात्रा को याद करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इस यात्रा–वृत में किसी एक जगह की वर्णन न होकर यूरोप प्रवास के दौरान प्राग, बर्लिन, कोपेनहेगेन, आइसलैंड आदि स्थानों का जिक्र किया गया है। लेखक ने निजी अनुभव को भी इस यात्रा–वृत्तांत में साथ–साथ रखा है।

इस किताब की भूमिका में लेखक लिखते हैं– इन यात्राओं में अनेक ऐसी घड़ियां आई थीं जिन्हें शायद मैं आज याद करना नहीं चाहूंगा... लेकिन घोर निराशा और दैन्य के क्षणों में भी यह खयाल कि मैं इस दुनिया में जीवित हूं, हवा में सांस ले रहा हूं, हमेशा एक मायावी चमत्कार–सा जान पड़ता था।[6]

लेखक ने परिवेश को पूर्ण रूप से उभारने के लिए प्रकृति का वर्णन भरपूर किया है भाषा चित्रात्मक है। मानसिक उहापोह की स्थिति इस वृत्तांत में दिखाई पड़ता है। रंगों का बढ़िया चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

निबंध – विचारों या भावों का ऐसा प्रकटीकरण जिसे बौद्धिक या तार्किक ढंग से स्पष्ट किया गया हो निबंध कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध के सम्बन्ध में लिखते हैं–

यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में सबसे अधिक संभव होता है। इसीलिए गद्य शैली के विवेचक उदाहरण के लिए अधिकतर निबंध ही चुना करते हैं।[7]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध विधा को गंभीर तथा सुविचारित स्वरूप प्रदान किया तो, हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने ललित निबंधों के द्वारा इस विधा को नई ऊंचाई दी। निबंध का दायरा आज व्यापक दिखाई पड़ता है आचार्य शुक्ल ने निबंध की मुख्यतः तीन शैलियां स्वीकार की हैं –

'निबंध या गद्य विधान कई प्रकार के हो सकते हैं– विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक।[8] निर्मल वर्मा विरचित 09 निबंध संग्रह प्राप्त हैं –
1.शब्द और स्मृति (1976),
2.कला का जोखिम (1981),
3.ढलान से उतरते हुए (1985),
4.भारत और यूरोः प्रतिश्रुति के क्षेत्र (1991),
5.इतिहास स्मृति आकांक्षा (1991),
6.दूसरे शब्दों में (1997),
7.आदि अंत और आरंभ (2001),
8.साहित्य का आत्मसत्य (2005) तथा
9.सर्जना पथ के सहयात्री (2006).

निर्मल वर्मा के निबंध उनकी अभिव्यक्ति की ऐसी सिद्धि है जिसके द्वारा बहुत सहजता से जीवन में आई उतार–चढ़ाव एवं अपनी उपलब्धियों को अनायास ही प्रेषित कर दिया है। संस्कृति, सभ्यता, स्वतंत्रता, इतिहास–बोध जैसे अलग–अलग विषयों पर बहुत बारीकी से विश्लेषण किया है। भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति को बड़ी ही सहजता से व्यक्त करने का प्रयास किया है।

निर्मल वर्मा ने एक साक्षात्कार में स्वीकार करते है–

'मैं अपने निबंधों और कहानियों में कोई फर्क नहीं देखता। दोनों ही तृष्णाएं भले ही अलग–अलग हों, शब्दों के जिस जलाशय से वे अपनी प्यास बुझाते हैं वह एक ही है। निबंध मेरी कहानियों के हाशिए पर नहीं, उसके भीतर के रिक्त स्थानों को भरते हैं जहां मेरी तृष्णाएं सोती हैं।'[9]

साक्षात्कारः– आधुनिक गद्य साहित्य की कथेतर विधाओं में साक्षात्कार विधा का विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। प्रायः महत्वपूर्ण व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया जाता है। अंग्रेजी में इस शब्द के लिए श्इंटरव्यूश का प्रयोग किया जाता है। ऐसे व्यक्ति जिसके बारे में जानने की इच्छा लोगों के मन में होती है। जिसके विचारों का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिन्होंने समाज अथवा देश के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है या योगदान दिया है। कथेतर विधाओं में साक्षात्कार विधा का प्रवर्तन भारतेंदु युग से माना जाता है प्रायः देखा जाता है कि हर नई साहित्यिक विधा ने अपने आगमन की घोषणा पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से ही की है। विशाल भारत, आलोचना, वीणा आदि पत्रिकाएं साक्षी रही हैं।

'हिंदी गद्य की नव्यतम विधाओं में आज इंटरव्यू सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है इसके लिए साक्षात्कार, भेंटवार्ता, अंतरंगवार्ता, तथा परिचर्चा शब्द भी पर्याय रूप में प्रयुक्त होते हैं इंटरव्यू से अभिप्राय उसे रचना से है, जिसमें लेखक व्यक्ति विशेष के साथ साक्षात्कार करने के बाद प्रायः किसी निश्चित प्रश्नमाला के आधार पर उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में प्रमाणिक जानकारी प्राप्त करता है और फिर उसे लिपिबद्ध करके तथा समालाप्य को दिखा कर एवं सही करा कर पाठकों तक पहुंचा देता है।'[10]

इंटरव्यू के माध्यम से किसी लेखक साहित्यकार या प्रमुख व्यक्ति के बारे में ठीक–ठीक जानकारी मिल जाती है, एक प्रकार से देखे तो यह प्रायमरी डाटा है जिसमें कहीं कोई दुराव छिपाव की संभावना नहीं होती है वार्तालाप के माध्यम से किसी रचना के पीछे का उद्देश्य पता चल पाता है। श्संसार में निर्मलश वर्मा एक वृहत संस्करण गगन गिल द्वारा संपादित किया गया है पूर्वार्ध और उतराद्ध दो भागों में विभाजित है जिसमें विनोद भारद्वाज, स्मितु कोठारी, कुलदीप सिंह, विष्णु नगर, रत्नधर झा, कन्हैयालाल नंदन अशोक वाजपेई, मदन सोनी, ध्रुव शुक्ल, उदयन संजीव ठाकुर, दक्षा हकी, मिथिलेश सुलभ चंद्र भूषण, उमेशचंद्र चतुर्वेदी, पंकज, संजीव क्षितिज राजेश वर्मा, रविंद्र त्रिपाठी, गिरधर राठी, रत्नोत्तमा सेन गुप्ता, वीणा श्रीवास्तव, विनोद भारद्वाज, शंकर शरण, पी. कृष्णन, माधव भान सुकृता पॉल, सुकांत दीपक, अरुंधति सुब्रह्मण्यम, शुचिस्मिता, अरविंद त्रिपाठी, शंकर शरण और जहांआरा वसी से हुई बातचीत संवाद अलग–अलग नाम से प्रकाशित हैं। इस पुस्तक में निर्मल वर्मा की साहित्यिक अभिरुचि दिनचर्या किसी भी रचना लिखने का करण जैसे तमाम चीजों का बखूबी वर्णन किया है। लेखक शुरुआत के दोनों कम्युनिस्ट पार्टी में थे। जिसका जिक्र विनोद भारद्वाज से बातचीत के दौरान होता है। जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे हिंदी

लेखकों का गहरा असर अपने बातचीत के दौरान बताया है। इन्होंने कविता नहीं लिखी है लेकिन संगीत की दिलचस्पी इनकी रचनाओं में देखी जाती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है, कि लेखक के निजी जीवन से लेकर साहित्य के हर क्षेत्र से अवगत साक्षात्कार के माध्यम से हो सकता है।

डायरी

ऐसी विधा जिसमें लेखक के हृदयगत भावात्मक बोध अत्यंत ही संवेदनशील क्षणों में शब्दों के परिधान पहन कर चुपके से पन्नों पर अंकित हो गए हो, डायरी की संज्ञा दी जाती है। डायरी हमारी स्मृति को संजोए रखती है। भविष्य में उस पन्ने को देखकर वर्तमान में बीते कल को देख सकते हैं। डायरी को बेवाक जिंदगीनामा कहा जाता है। धुंध से उठती धुन निर्मल वर्मा द्वारा रचित डायरी है। यात्रा संस्मरण का मिला जुला लेख से संबंधित है। इस किताब के तीसरे अंश का नाम श्हार्वर्ड डायरीश है।

पत्र साहित्य

पत्र साहित्य की परंपरा बहुत पुरानी रही है। पिता के पत्र पुत्री के नाम, पुत्र के पत्र पिता के नाम, व्यक्तिगत पत्र साहित्यिक पत्र ऐतिहासिक पत्र आदि लिखे गए हैं। पत्र साहित्य से हम अपने विचार या भाव को दूसरे तक संप्रेषित करते हैं। निर्मल वर्मा का एक पत्र संकलन श्प्रिय रामश नाम से प्रकाशित हुआ। जिसमें प्राग, भोपाल, बुडापेस्ट, मदुरै, नई दिल्ली, रानीखेत, शिमला, लंदन आदि अलग अलग जगह का वर्णन है। जिसमें लेखक अपने स्वजनों और मित्रों को पत्र भेजा करते थे।

रेखाचित्र

रेखाचित्र अत्यंत रोचक विद्या के रूप में जाना जाता है। गद्य की नवीन विधाओं में एक स्थान रेखाचित्र का भी है। साहित्यकार कलाकार का रूप लेता दिखाई पड़ता है। किसी रचना का कलात्मक वर्णन जो बहुत कम रेखाओं से बनी हो, रेखाचित्र कहा जाता है। रेखाचित्र में वस्तु निष्ठता की संभावना सापेक्षतः अधिक होती है क्योंकि वह ऐसे व्यक्तियों या घटनाओं पर हो सकता है, जिससे गहरा और निजी संबंध ना भी हो। इस विधा में विवरण की गुंजाइश कम होती है, क्योंकि रेखाचित्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है, कि कम से कम वर्णन करते हुए सिर्फ रेखाओं के माध्यम से कैसे चित्र बनाएं? महादेवी वर्मा काश्मेरा परिवारष अतीत के चलचित्रश्रामवृक्ष बेनीपुरी काश्माटी की मूर्तिश, बनारसी दास चतुर्वेदी का श्सेतुबंधश आदि रेखा चित्र पढ़ते समय हमारे समक्ष एक बिंब प्रस्तुत होता है। निर्मल वर्मा ने एक विधा के रूप में देखा रेखाचित्र की रचना नहीं की है लेकिन उनकी अन्य विधाओं को पढ़कर नजर के सामने एक चित्र बनता दिखाई पड़ता है, चाहे वह परिंदे का झुंड, कान्वेंट स्कूल, पर्वत, पहाड़, चीड़ के वृक्ष, ही क्यों ना हो।

जीवनी

जब कोई लेखक किसी साहित्यकार, राजनेता महापुरुष या अन्य किसी व्यक्ति के जीवन चरित्र को संपूर्णता में अंकित करें, उसके अच्छे बुरे गुणों को स्पष्ट रूप में वर्णित करें, जीवनी कहा जाता है। जीवन लेखन के लिए यह जरूरी नहीं है कि जिस व्यक्ति के बारे में लिखा जाए लिखा जा रहा है, वह महान हो। बल्कि अमुक व्यक्ति का समाज में क्या योगदान है, देश के लिए उसने क्या किया? इन सभी बातों का भी ध्यान रखा जाता है। बच्चन सिंह हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास में लिखते हैं–

ष्जीवनी लेखन की दिशा में कुछ बहुत अच्छे प्रयास हुए हैंय जैसे–रामविलास शर्मा का श्निरालाश की साहित्य साधना भाग 1' और विष्णु प्रभाकर का श्आवारा मसीहाश अमृत राय का श्कलम का सिपाहीश और विष्णुचन्द्र शर्मा के श्नजरुल इस्लामश और मुक्तिबोध की जीवनियां दृष्टव्य है।'

प्रारंभिक युग में जहां परिमार्जित भाषा का अभाव भाव दिखाई पड़ता है। वही द्विवेदी युग में प्रौढ़ भाषा में जीवनियां लिखी गई राष्ट्रीय चेतना इस युग में प्रखर था जनता के मन में देश प्रेम की भावना जागृत करना था। निर्मल वर्मा ने अपने साक्षात्कार में जीवनी विधा के विषय में बताया– 'आत्मकथा के बारे में कुछ तो कहा नहीं जा सकता क्योंकि कुछ लोग अपने बारे में तथ्य नहीं बताना चाहते। लेकिन हिंदी में जो जीवनियां लिखी गई हैं पहले ही काम हैं और उनमें अक्सर एक लेखक या व्यक्ति की मूर्ति–पूजा की जाती है जैसे उसमें कमजोरियां नहीं रहीं, अन्तद्वन्द नहीं रहा। एक व्यक्ति की उसके जीवन के समूचे उतार–चढ़ाव, उसके छिछोरेपन, उसकी महानता इस सब के बीच जो जिंदगी रहती है, जब तक हम उसको नहीं उकेर पाएंगे तब तक जीवनी की विधा हम कभी विकसित नहीं कर सकते।'

रिपोतार्ज

रिपोर्ताज एक कलात्मक साहित्यिक विधा है। इस विधा में वर्ण विषय को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है। आंखों देखा विवरण को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि पाठक उस घटना से तारतम्य स्थापित करता हुआ पाता है। हिंदी में रिपोर्ताज लेखन की शुरुआत शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा' (1938) से मानी जाती है।

संस्मरण और आत्मकथा

कथेतर गद्य विधाओं में संस्मरण ऐसी विधा है जिसमें किसी व्यक्ति, घटना, वस्तु, दृश्य आदि के संपूर्ण रूप को गहनता से प्रस्तुत किया जाता है। इस क्रम में संस्मरणकार अपनी अनुभूति, अपनी संवेदना को संस्मरण में शामिल करता है। द्विवेदी युग से प्रारंभ होकर आज तक संस्मरण लिखा जा रहा है।

अरुण प्रकाश लिखते हैं कि– 'हिंदी में संस्मरण यदा कदा लिखे जाते थे। आलोचना भी उसे एक अमहत्वपूर्ण विधा मानकर चलती थी। लिहाजा संस्मरणों की अनदेखी होती थी। जहां तक मेरा अनुमान है कि विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा नामवर सिंह पर लिखे संस्मरण श्हक जो अदा न हुआ' ने

ऐसा धूम मचाया कि एकदम से इस विधा की क्षमता का पुनर्प्रकटीकरण हुआ और संस्मरण की ओर कई रचनाकार मुंडे। काशीनाथ का इस तरफ पहले मुड़ना संगत ही माना जाना चाहिए।'

आत्मकथा

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के संघर्ष, अपने अनुभव, वे सारी उपलब्धियां, अपने विचार, जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण या अमहत्वपूर्ण घटनाओं को स्वयं लिखते हैं, आत्मकथा कहा जाता है। लेखक अपने जीवन की यात्रा को, पीड़ा को, सुख–दुख के विवरण को, विस्तार से प्रस्तुत करता है। आत्मकथा लेखन में जीवन के अनुभव और घटनाओं को वस्तुनिष्ठ होकर प्रस्तुत किया जाना जरूरी होता है, जिससे पाठकों को प्रेरणा मिल सके। उसके बारे में सत्य तथ्य जान सके, उससे परिचित हो सके। जीवन के क्रमबद्ध घटनाओं को पाठक के समक्ष खुली किताब की तरह रखी जाती है, जिससे लेखक या साहित्यकार के दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। चूंकि आत्मकथा में कल्पना नगण्य या यूं कहे कि नहीं होता है, जिससे पाठक उस स्वानुभति से भली भांति रूबरू हो जाता है।

निष्कर्ष

कथेतर गद्य विधाओं में कल्पना का सहारा नहीं लिया जाता, वास्तविक अनुभवों और घटनाओं का वर्णन किया जाता है। कई बार रेखा चित्र भी स्मृति आधारित होते हैं ऐसी स्थिति में इसे संस्मरणात्मक रेखाचित्र या रेखा चित्रात्मक संस्मरण कहा जाता है। इन दोनों विधाओं में जितने अंतर है उससे अधिक समानताएं है। महादेवी वर्मा कृत श्अतीत के चलचित्रश और शिवपूजन सहाय कृत वे दिन वे लोग ऐसी रचनाओं के प्रतिनिधि उदाहरण हैं, जिनमें दोनों विधाओं के अंतर मिट गए हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रकाश, अरुण, गद्य की पहचान, गाजियाबादः अंतिका प्रकाशन, 2012.
2. प्रकाश, अरुण, गद्य की पहचान, गाजियाबादः अंतिका प्रकाशन, 2012.
3. सांकृत्यायन, राहुल, घुमक्कड़–शास्त्र, नई दिल्लीः प्रभाकर प्रकाशन, 2024.
4. नगेन्द्र, डॉ, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नई दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1973.
5. बेनीवाल, अनुराधा, आजादी मेरा ब्रांड, पटनाः राजकमल प्रकाशन, 2016
6. वर्मा, निर्मल, चीड़ों पर चांदनी, वाराणसीय भारतीय ज्ञानपीठ, 1964.
7. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पटनाः अनुपम प्रकाशन, 2018.
8. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पटनाः अनुपम प्रकाशन, 2018.
9. गिल, गगन, संसार में निर्मल वर्मा, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2020.
10. नगेन्द्र, डॉ., हिन्दी साहित्य का इतिहास, नई दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1973.
11. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन, 1996.
12. गिल, गगन, संसार में निर्मल वर्मा, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2020.
13. प्रकाश, अरुण, गद्य की पहचान, गाजियाबादः अंतिका प्रकाशन, 2012.